इकाई 1 नगरीय समाजशास्त्रीयः प्रकृति एवं संभावनाएँ*

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ

1.2.1 नगरीय समाजशास्त्र का उदय

1.2.2 भारत में नगरीय समाजशास्त्र

1.3 प्रमुख प्रारंभिक प्रभाव

1.3.1 शिकांगो विचारधारा

1.3.2 सामुदायिक अध्ययन

1.4 नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति और संभावनाएं

1.5 सारांश

1.6 संदर्भ

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे–

- नगरीय समाजशास्त्र के उद्‌गम और विकास का वर्णन;
- शिकागो विचारधारा का महत्व नगरीय समाजशास्त्र के उद्‌गम और विकास में इसका योगदान; और
- नगरीय समाजशास्त्र का अध्ययन विषय तथा उसकी संभावनाऐं।

1.1 प्रस्तावना

यह आपके पाठ्यक्रम की पहली इकाई है। इसमें हमने नगरीय समाजशास्त्र के अर्थ तथा उसकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला है। 'अरबन' शब्द लेटिन भाषा के अरबानस से लिया गया है जिसका अर्थ है – नगर से संबंधित या नगर में रहने वाला। अरबन शब्द के अंतर्गत महानगर तथा छोटे शहर दोनों आते हैं, यह ग्राम अथवा देहात के ठीक विपरीत है। नगरीय समाजशास्त्र यह बताता है कि नगर के जीवन का सामाजिक कार्यों, सामाजिक संबंधों, सामाजिक संस्थानों तथा उन सब सभ्यताओं पर जो शहरी रहन–सहन पर आधारित हैं तथा उससे निकले हैं, क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अंतर्गत नगरीय क्षेत्रों की संरचनाओं, गतिविधियों, बदलावों तथा समस्याओं के अध्ययन का प्रयास किया गया है तथा नगरों के विकास से संबंधित योजनाओं व नीतियों की व्याख्या की गई है।

*डॉ. शैली भाषांजलि, सुशांत विश्वविद्यालय, गुरूग्राम (हरियाणा)

1.2 नगरीय समाजशास्त्र का अर्थ

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति तथा संभावनाएं एक व्यापक तथा बहुआयामी विषय है। इसके अंतर्गत नगरीय जीवन के लगभग सभी पक्ष सम्मिलित हैं। नगर का अर्थ यह नहीं है कि वहां एक सीमित क्षेत्र में बहुत बड़ी संख्या में लोग रहते हैं, परन्तु यह एक जटिल विविधता भी है जो यह दर्शाता है कि एक साथ रहने के बावजूद नगर के निवासी एक दूसरे से अलग होते हैं। इस मामले में आदिकालीन जनसामान्य तथा किसानों के समाजों का अस्तित्व नगरों से एकदम अलग हैं। इसीलिए नगरों में रहने वाले लोगों को समझने के लिये उन पद्धतियों से अलग पद्धतियां अपनाई जाती हैं जो गांव में रहने वाले सरल तथा एक जैसे समाजों के अध्ययन के लिए अपनाई जाती हैं। इससे यह पता लगता है कि नगरों को समझने के लिये हमें ऐसी व्यापक सांख्यकीय जानकारियों की आवश्यकता पड़ेगी जो वह बता सकें कि वे मानव तत्व क्या हैं जिनसे ये बने हैं। आयु और लैंगिकता के आधार पर नगरीय समाज अन्य समाजों की तरह अलग प्रकार के होते हैं। परन्तु इनमें विविध आयु वर्गों तथा लैंगिक पहचान वाले समूह निवास करते हैं और नगर के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में पर्याप्त विभिन्नाएं होती हैं। नगरों में विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोग रहते हैं, जिसके कारण श्रम विभाजन की व्यापक संभावनाएं रहती हैं। यही कारण है कि नगरों में बाजार का विकास संभव हुआ है। नगरों में रहने वाले लोग धन, संपत्ति और आमदनी के हिसाब से अलग-अलग तरह के होते हैं। एक ओर ऐसे लोग भी हैं जिनके पास अपार संपत्ति है और दूसरी ओर ऐसे लोग भी है जो अत्यधिक गरीबी में जीवन जीने के लिये विवश होते हैं और स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं। नगरीय सभ्यता एक तरह से एक जटिल पूंजीवादी सभ्यता है जिसमें दुनिया के विभिन्न देशों में रहने वाले विभिन्न नस्लों के लोग समाहित हो जाते हैं और किसी न किसी तरह एक साथ मिलकर रहते हैं, और एक ऐसा समाज बनाते हैं जो वर्णसंकरों का एक बड़ा जमावड़ा होता है। जिसकी विशेषता यह होती है कि इसमें शामिल सभी लोग एक दूसरे के साथ घुले-मिले भी होते हैं और एक-दूसरे से अलग भी होते हैं, युद्ध की स्थिति में वे सब एक साथ खड़े हो जाते हैं और सब मिलकर मानवता के इतिहास में एक अभूतपूर्व संस्कृतियों का जटिल मिश्रण तैयार करते हैं। नगरों में रहने वाले मनुष्यों की यह विविधता उत्साह उत्तेजना और प्रोत्साहन का विशाल स्रोत है और साथ ही घर्षणों और टकरावों का भी कुल मिलाकर यही आधुनिक समाज की विशेषता है। (लुइर्स वर्थ – 1940)

बॉक्स 1.0: आरंभिक नगर

मैसोपोटामियां से एशिया और अमेरिकन देशों तक हरेक क्षेत्रों में आरंभिक दौर में नगर विकसित हुए। नव पाषण क्रांति के बाद 7500 वर्ष ईसा पूर्व में मैसोपोटामियां में सबसे पहले नगरों का बसना शुरू हुआ। मैसोपोटामियां के आरंभिक नगरों में ऐरिडू, उरूक तथा उर नगर शामिल हैं। सिंधु घाटी तथा प्राचीन चीन क्षेत्र में भी आरंभिक नगरों का उद्‌भव हुआ था। विश्व के सबसे प्राचीन नगरों में सबसे बड़ा नगर मोहनजोदाड़ों है, जो सिंधु घाटी में स्थित है (इस समय पाकिस्तान में है)। इस नगर का अस्तित्व 2600 वर्ष ईसा पूर्व में माना जाता है तथा बताया जाता है कि इसकी जनसंख्या 50,000 या इससे अधिक थी। प्राचीन अमेरिकाओं में आरंभिक नगर एंडीज तथा मैसोअमेरिका क्षेत्रों में विकसित हुए थे और ईसापूर्व 30वीं शताब्दी तथा ईसापूर्व 18वीं शताब्दी में फले-फूले।

गतिविधि 1

उस समाज को ध्यान से देखो जिसमें तुम रहते हो उसकी भौतिक प्रकृति को समझने की कोशिश करो और जानो कि ये एक गांव है, कस्बा है, नगर है या महानगर है। इसकी अब संरचना को ठीक से समझों और मेरा नगर/मेरा कस्बा/मेरा गांव शीर्षक से एक आलेख तैयार करो जिसमें वहां के लोगों उनकी संस्कृति तथा जीवन मूल्यों आदि का वर्णन हो। अपने अध्ययन केन्द्र पर जाकर अपने शैक्षिक सलाहकार तथा साथियों के साथ इस आलेख पर चर्चा कीजिए।

1.2.1 नगरीय समाजशास्त्र का उदय

समाजशास्त्र की शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का उदय 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में पश्चिमी देशों में हुआ था – औद्योगिक क्रांति के बाद। अमेरिका में इसे लोकप्रियता मिली। अमेरिका में शिकागो जैसे नगर नगरीय समाजशास्त्र के केन्द्र बन गये। औद्योगिक क्रांति के बाद भारी सामाजिक बदलाव आया और नगरों का विकास हुआ। इससे सामाजिक वैज्ञानिकों को यह प्रोत्साहन मिला कि वे नगरों को अध्ययन का विषय बनायें। नगरों के विकास में तेजी से वृद्धि होने के कारण 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों से लेकर 20वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों के बीच नगरों में हो रही इस विकास प्रक्रिया को समझने के प्रयास के रूप में 'नगरीय समाजशास्त्र' का उदय हुआ। इसके अंतर्गत नगरों की विकास पद्धतियां तथा उनके सामाजिक जीवन पर प्रभाव को शामिल किया गया। इसमें प्रमुख रूप से अमेरिका के नगरों में तेजी से हो रहे विकास को शामिल किया गया।

बॉक्स 1.1: नगरीकरण की समझ

नगरीकरण की व्याख्या एक उस प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है जिसमें लौकिक, स्थानिक तथा क्षेत्रीय परिवर्तन शामिल हैं जो उस समय समाज के जनसांख्यकीय, सामाजिक, आर्थिक, प्रौद्योगिक तथा पर्यावरणीय पक्षों में हो रहे थे। नगरीकरण का अर्थ है नगर के क्षेत्र में प्रगतिशील आबादी का बसना (डेविस किंग्सले 1965)। इस परिवर्तनों में मानव निवास स्थलियों पर जनसंख्या का घनीभूत होते जाना और गांवों की तुलना में बहुत बड़ा आकार ले लेना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली खेती-किसानी से हटकर उत्पादन के अन्य क्षेत्रों में प्रवृत्त हो जाना तथा उन सामाजिक लक्षणों में प्रगतिशील बदलावों का आते जाना जो परम्परागत ग्रामीण समाजों में हुआ करते थे।

औद्योगिक क्रांति के बाद मेक्स वेबर तथा जार्ज सिमेल जैसे समाजशास्त्रियों ने नगरीकरण को तेजी बदली प्रक्रिया तथा इसके कारण तेजी से बढ़ती सामाजिक अलगाव तथा अकेलेपन की प्रवृत्ति पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उल्लेखनीय बात यह है कि जार्ज सिमेल को नगरीय समाजशास्त्र का जनक माना जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी पुस्तक 'द मेट्रोपोलिस एण्ड मेंटल लाइफ' इस पर लिखी गई एक महत्वपूर्ण कृति थी जो 1903 में प्रकाशित हुई थी।

नगरीकरण की प्रक्रिया के तेजी से विस्तार को केंद्र में रखते हुए आरंभ में समाजशास्त्र पर तीन उत्कृष्ट पुस्तकें लिखी गईं। जी. सीमेल की 'डाई ग्रॉस्टेट एण्ड दास' गीस्टेस्ले बिन, 1903 मेक्स वेबर की 'डाई स्टेड़, 1921 तथा आर. मॉरियर की ली विपेज़ एंट ला विले, 1929।यद्यपि असली उछाल रोबर्ट ई. पार्क के विचारों से आया। उनका लेख 'द सिटी' जिसने नये युग का आरंभ किया 1915 में अमेरिका की पत्रिका 'अमेरिकन जर्नल ऑफ सोश्योलॉजी में प्रकाशित हुआ। यद्यपि उस समय इस पर थोड़ा ही ध्यान गया था।अभी तक समाजशास्त्र सामान्य विज्ञान के रूप में जाना जाता

था, इसकी अपनी स्वतंत्र पहचान नहीं हो पाई थी। समाजशास्त्र अब भी अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयास कर रहा था परन्तु प्रगति धीरे-धीरे ही हो पा रही थी। 1925 में एक बड़ा बदलाव आया। पार्क ने अपना लेख फिर से प्रकाशित करवाया, इसके साथ ही उनके कुछ अन्य लेख भी प्रकाशित हुए थे। ये सारे लेख एक पुस्तक में शामिल करके प्रकाशित कराये गये थे। जिसका शीर्षक था 'द सिटी'।अगले वर्ष पार्क तथा उनके सह-संपादक बर्गेस ने लघु-लेखों का एक संकलन 'द अर्बन कम्युनिटी' शीर्षक से पुस्तकाकार में प्रकाशित किया। इसका लोगों पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। नगरीय समाजशास्त्र पर पहली किताब 1929 में प्रकाशित हुई। इसके साथ ही नगरीय समाजशास्त्र के लिए नये क्षेत्र एवं विस्तार के दरवाजे खुल गए।

यहाँ यह बताना महत्वपूर्ण है कि नगरीय समाजशास्त्र का स्तर किसी राष्ट्र के विकास के स्तर तथा नगरीकरण से जुड़ा है। क्योंकि शिकागों शहर में समाजशास्त्र के विद्वानों की एकाग्रता जमावड़ा थी, इसलिए यह नगर नगरीय समाजशास्त्र के उद्‌भव और विकास का आधार बना। रोबर्ट ई पार्क, रोबर्ट डी. मेकेंजी, ई. डब्ल्यू. बर्गेस, लुइस वर्थ आदि विद्वान नगरीय समाजशास्त्र पर काम कर रहे थे और इस क्षेत्र में भारी योगदान दे रहे थे – यही से शिकागो विचार धारा का जन्म हुआ।

1.2.2 भारत में नगरीय समाजशास्त्र

भारत में सबसे पहले नगरीय अध्ययन नामक पाठ्यक्रम का आरम्भ हुआ। प्रसिद्ध सामाजिक विज्ञानी पैट्रिक गेड्ज़ ने मुम्बई विश्वविद्यालय में 1915 में किया था। बाद में नगरीय समस्याओं का अध्ययन भूगोल के विद्वानों तथा समाजशास्त्र के विद्वानों ने भी 1920 में आरम्भ किया। यद्यपि नगरीय समस्याओं पर व्यापक रूप से अनुसंधान कार्य भारत में आजादी के बाद ही शुरू हो पाया। इण्डियन कॉसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR) ने शोधकर्ताओं को भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, लोक प्रशासन आदि के अंतर्गत सहयोग दिया। भारत में क्योंकि नगरों का विकास तीव्र गति से नहीं हो रहा था और भारत के गांव तथा शहरों में अधिक अंतर देखने को नहीं मिलते थे। अतः भारत में नगरीय समाजशास्त्र उन दिनों अधिक सार्थक नहीं लगा। इसके अलावा परम्परागत नगरों तथा गांवों के बीच भारत में कोई भेदभाव की स्थिति नहीं थी क्योंकि गांव तथा नगर दोनों में एक जैसी ही सभ्यता हुआ करती थी– एक जैसा जातिवाद, एक जैसे परिवार और नातेदारी आदि।

1951 की जनगणना के बाद यह पता लगा कि भारत के नगरों में जनसंख्या काफी बढ़ गई है, और उसी समय सामाजिक विज्ञानियों ने नगरों के अध्ययन में विशेष रुचि लेना आरम्भ किया। यह रुचि 1970 के दशक तक आते-आते बहुत बढ़ गई और परिणाम यह हुआ कि नगरीय समाजशास्त्र की अवधारणा को महत्व मिलने लगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर पलायन नगरीय विकास तथा ऐसे ही अनेक क्षेत्रों में जैसे पड़ोस, गंदी बस्तियां, सामाजिक स्तरीकरण, शिक्षा, नृजातीय टकराव तथा आंदोलन, नातेदारी, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक समस्याएं तथा ग्रामीण क्षेत्रों पर नगरीकरण का प्रभाव आदि विषयों की ओर समाजशास्त्रियों और सामाजिक मानव विज्ञानियों का ध्यान आकर्षित हुआ (राव, 1982)।

80 और 90 के दशक के दौरान नगरीकरण की प्रक्रिया, पद्धतियां तथा प्रवृत्तियों पर विशेष रूप से अध्ययन शुरू हुआ। परन्तु महानगरीकरण तथा क्षेत्रीय योजनाओं के निर्माण पर उतना कार्य नहीं हो पाया, ग्रामों से नगरों की ओर होने वाले पलायन के अध्ययन पर भी विशेष ध्यान दिया गया। नगरों के आस-पास ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों के कारण बसने वाली गन्दी बस्तियां भी अध्ययन का केन्द्र बनीं। इसके

साथ ही लोगों को अवैध तरीके से यहां-वहां बसाने की प्रक्रिया की ओर भी विद्वानों का ध्यान गया।

नगरीकरण पर गठित राष्ट्रीय आयोग (NCU) की रिपोर्ट पांच भागों में प्रकाशित हुई इसमें नगरीय समस्याओं को जमीनी धरातल पर समझने का प्रयास किया गया था तथा राज्य स्तरों पर भी नगरीकरण पर विशेष रूप से ध्यान देने की सिफारिश की गई। राष्ट्रीय नगरीय आयोग ने यह सुझाव दिया था कि नगरीकरण में देश के विकास की अन्नत संभावनाएं मौजूद हैं। सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित नगरीकरण द्वारा देश के निवासियों के जीवन में मौलिक परिवर्तन आ सकते हैं। इस दशक में गन्दी बस्तियों तथा यहां-वहां बसने वाली बस्तियों के अध्ययन पर काफी ध्यान केंद्रित हुआ, जैसा कि कालडेट 1989, धेदेव 1989, संधू 1989, आर. एन. राव 1990, दास 1993, देसाई 1995, डे विट 1996, प्यौरवाल 2000, लोगों तथा दास 2001 ने उल्लेख किया है। इसके अलावा अनेक ऐसे विवरण प्रकाशित हुए जिनमें नगरीय विकास से संबंधित सभाओं तथा सम्मेलनों से संबंधित गतिविधियों तथा नगरीकरण के विभिन्न पक्षों जैसे मानव बस्तियां, नगरीय निर्धन तथा मानव बस्तियों के सुव्यवस्थित रूप से बसाये जाने आदि को शामिल किया गया था। इस दौरान विभिन्न विद्वानों ने जो कार्य किये उनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं – मोहन्ती 1993, डिडडे तथा रंगास्वामी 1993, रॉय और दास गुप्ता 1995, कुंडू 2000, संधू एट एल 2001, शर्मा और सीता 2001 आदि।

21वीं सदी नगरीकरण की सदी है। हमें यह याद रखना चाहिये कि आने वाले बीस वर्ष 2001-2021 तक के दौरान भारत की नगरीय जनसंख्या पहले से दोगुनी हो जायेगी जो लगभग 61.8 करोड़ आंकी जा सकती है (भारत सरकार)।

बोध प्रश्न 1

1) पश्चिमी देशों में नगरीय समाजशास्त्र के विकास की व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में नगरीय समाजशास्त्र के उदय पर एक टिप्पणी लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 प्रमुख प्रारंभिक प्रभाव

आरंभिक दौर में नगरीय समाजशास्त्र को पहचान प्रदान कराने वाली दो प्रमुख विचारधाराएं अस्तित्व में आई।

1.3.1 शिकागो विचारधारा

शिकागो की समाजशास्त्रीय विचारधारा को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने नगरीय समाजशास्त्र को एक संस्थागत पहचान दिलाई तथा उन दिनों प्रमुख रूप से उल्लेखनीय विषय – नगरीय क्षेत्रों का अध्ययन तथा सामाजिक अंतर्संबंध में नगरीय समाजशास्त्र को एक उपक्षेत्र के रूप में शामिल किया गया। शिकागो में 20वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में समाजशास्त्रियों के इस समूह ने नगरीय पर्यावरण का अध्ययन किया। उनके इस कार्य का अनेक शोधकर्ताओं पर प्रभाव पड़ा जो शोधकर्ता गुणात्मक पद्धति द्वारा नृवंशाविज्ञान आधारित योजनाबद्ध तरीके से नगरीय परिघटना एवं नगरीय क्षेत्र के लिये भूमि उपयोग आदि विषयों पर शोधकार्य कर रहे थे। शिकागो विचारधारा में समाजशास्त्रीय तथा मानव विज्ञान संबंधी सिद्धांतों को नगरीय संरचनाओं तथा नगरों के व्यापक अंतर्संबंधों को समझने के लिये एक साथ मिलाया। शिकागो विचारधारा से जुड़े समाजशास्त्रियों ने संरचनागत, सांस्कृतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत मनुष्यों के व्यवहारों की प्रमुख रूप से व्याख्या की।

बॉक्स 1.2: दृष्टांत

बीसवीं शताब्दी के आरंभि वर्षों में शिकागो नगर में अमेरिका के ग्रामीण क्षेत्रों से आकर बहुत लोग बस चुके थे। इससे जो नया वातावरण इस नगर में उत्पन्न हुआ था उस पर विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों से आने वाले लोगों का प्रभाव था। राजनैतिक भागेदारी तथा अंर्तसामुदायिक संगठनों का इस दौर में अत्यधिक प्रभाव रहा। अनेक महानगरीय क्षेत्रों में ऐसी जनगणना प्रौद्योगिकियां इस्तेमाल की जाने लगी थीं जिनसे सूचनाओं को एकत्रित किया जा सकता था और आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग किया जा सकता था। इसमें भाग लेने वाले संस्थानों में शिकागो विश्वविद्यालय, समाजशास्त्री पार्क बर्गेस तथा मैकेन्जी शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा नगरीय समाजशास्त्र के आरंभिक दौर के तीनों विद्वान शामिल थे। इन्होंने व्यापक रूप से ऐसे सिद्धांतों का निर्माण किया जो सांस्कृतिक विकास से संबंधित थे और संबंधों के निर्माण में स्थानीय संस्थानों की व्याख्या कर सकते थे। समाज के अनेक प्रकारों के उपसांस्कृतिक सिद्धांतों अध्ययन को भी महत्व दिया गया जिनमें विभिन्न प्रकार के समूह बेघर वाले लोग तथा उनके जीवन मूल्य तथा तौर-तरीके शामिल थे। यह सिद्धांत इस मान्यता का विरोधी था कि नगरीकरण द्वारा सामाजिक विघटन और अकेलेपन की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है।

शिकागो विचारधारा नगरीय संस्कृति की पक्षधर थी – एक ऐसी संयुक्त संस्कृति जो नगर में रहने वाले लोगों को लिंग वर्गीय विविधता, लैंगिक विविधता नस्लीय/जातीय विविधता के बावजूद नगरवासी के रूप में एक अलग पहचान प्रदान करती है। सामाजिक स्वीकरण की स्थितियों तथा अंतर्विरोधों पर जोर देते हुए एक विविधतापूर्ण स्थानीय समाज की निर्मित के लिए शिकागो के समाजशास्त्री उस समय अमेरिकन समाज की केंद्रीय समस्या से जूझ रहे थे। अमेरिका में उस समय अनेक संस्कृतियों से आए असमान समुदाय निवास करते थे तथा लोगों को अपनी जड़े जमाने के लिए प्रतिस्पर्धाओं के दौर से गुजरना पड़ रहा था।

यद्यपि उन दिनों यूरोपीय नगरों के हालात इतने चरम पर नहीं थे। जो लोग पहले ग्रामीण क्षेत्रों में रहकर खेती का काम किया करते थे और जो गांवों में स्थायी रूप से जड़ें नहीं जमा पाये थे। वे अब नगरों में औद्योगिक संदर्भों में जगह बना रहे थे। सामाजिक एकीकरण के अध्ययन के साथ-साथ, नगरीय समाजशास्त्र ने स्थानीय जीवन-पद्धतियों पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया था। शिकागो विचारधारा से जुड़े अन्य समाजशास्त्री सामाजिक विकास की डार्विनवादी सोच से जुड़े थे जिसे मानव

परिस्थितिकी के रूप में (हॉली, 1956, स्चनोर 1965) जाना गया।इस प्रकार मानव-बस्तियों के प्रकार व उनके विकास से जुड़ी गतिविधियाँ प्रतिस्पर्धा और सामाजिक चयन के दौर से गुजर रही थीं, सामाजिक स्थितियों का सांस्कृतिक एकीकरण के उद्देश्य से विश्लेषण किया जा रहा था और उसने नगरीय समाजशास्त्र की विषय-वस्तु तैयार हो रही थी। बीसवीं शताब्दी के पूवार्ध में वैचारिक पक्षपात के कारण औद्योगीकरण तथा नगरीकरण को लेकर अब भी ऐतिहासिक समस्याएं उठाई जा रही थीं।

1.3.2 सामुदायिक अध्ययन

दूसरी शाखा को 'सामुदायिक अध्ययन' नाम दिया गया। इसमें व्यक्तिगत समुदायों की सामाजिक संरचना तथा निवासियों की जीवन-शैलियों से जुड़े मानव-विज्ञान का व्यापक रूप से अध्ययन किया जाना शामिल था।

1960 तथा 1970 के दशकों में सामान्यतः सामाजिक समस्याएं तथा विशेष रूप से नगरीय समस्याएं उन मान्यताओं व मानकों से बहुत अलग हो गई थीं जिन्होंने शिकागो विचारधारा को जन्म दिया था। सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण अब कोई बड़ी समस्या नहीं रह गया था। नगरीय-औद्योगिक समाज पर नियंत्रण तथा दिशानिर्देशन के लिए संघर्ष अब नगरीय समस्याओं में पहले स्थान पर था। इसके अलावा नये सामाजिक आंदोलन जन्म ले रहे थे जो विकास एवं औद्योगीकरण की धारणा को खुली चुनौती दे रहे थे। वे पहले के मानव-अनुभवों को आर्थिक विकास तथा समाज व प्रकृति के बीच अस्तित्व में आये नये सम्बंधों से ज्यादा महत्व देने पर तुले थे। लैंगिक समस्याओं को बढ़-चढ़कर उठाया जा रहा था। बहुसांस्कृतिक दुनिया की नगरीय अनुभवों की विविधता को अंततः सामाजिक विज्ञान ने स्वीकृति प्रदान कर दी थी। दिन प्रतिदिन की जिंदगी और नगरीय प्रक्रिया दोनों के संगठन में राज्यों के व्यापक हस्तक्षेप द्वारा सामाजिक सेवाओं तथा जन-सुविधाओं पर नियंत्रण प्रमुखता बन गया था।

इस प्रकार एक नया नगरीय समाजशास्त्र एक नई नगरीय वास्तविकता की कोख से जन्म ले चुका था। अमेरिका तथा यूरोप में इसे विभिन्न प्रकार के निर्देश प्राप्त हो रहे थे। अमेरिका में बहुलवादी राजनैतिक विज्ञान ने नगरीय सामाजिक विश्लेषण में राजनैतिक टकराव तथा सौदेबाजी की स्थिति पैदा कर दी थी। (बेनफील्ड तथा विल्सन 1963; मोनेनकोप, 19630189।

इस प्रकार इन दोनों निर्देशों ने नगरीय समाजशास्त्र में संस्कृतिवादी और संरचनावाद दृष्टिकोणों को जन्म दिया। संस्कृतिवादी ने नगरीय जीवन के भाव-जगत पर विशेष रूप से जोर दिया– लोगों को नगरों में रहना कैसा लगता है तथा शहरी जीवन किस प्रकार संचालित होता है, इस सबको अध्ययन एवं विश्लेषण का केंद्र बनाया। इस विचारधारा ने नगरीय जीवन के सांस्कृतिक, संगठनात्मक तथा सामाजिक मनोवैज्ञानिक परिणामों के अध्ययन एवं मंथन पर पूरा जोर दिया। लुईस वर्थ इस दृष्टिकोण पर जोर देते हैं।

बॉक्स 1.3

लुइस वर्थ शिकागो विचारधारा के प्रमुख समर्थकों में से एक थे। उन्होंने सिमेल के प्रेरणा प्राप्त की थी। उन्होंने शिकागों में रूस से निर्वासित यहूदी शरण थी बस्तियों पर शोध किया था। वर्थ तथा उनके साथियों ने नगर की स्थानीय पद्धतियों का निरीक्षण किया था। इन बस्तियों में रहने वाले लोगों में जीवित रहने तथा विकास करने के लिए जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा थी। वे नगरीय क्षेत्र को बंद स्थली मानते थे जहाँ का

वातावरण चारों ओर से घिरा हुआ और बंद था और गतिविधियां भी बंद थीं।वर्थ का कार्य नगरीय समाजशास्त्र के उत्कृष्ट रूप की पराकाष्ठा है। वर्थ ने नगरवासियों के जीवन की विशेषताओं का अध्ययन किया तथा यह जानने का प्रयास किया कि उनका जीवन किस प्रकार विशिष्ट नगरीय संस्कृति को जन्म देता है। इस प्रकार नगरवाद लोगों की जरूरत बन गया और व्याख्या का केंद्र बना। उनके नगरीय सिद्धांत ने अनेक ऐसे घटकों को उजागर किया जो नगर की सर्वस्वीकारीय सामाजिक विशेषताएं थीं। नगरीय/औद्योगिक समाजों तथा लोक/ग्रामीण समाजों के बीच के अंतरों को उन्होंने आकार दिया। उन्होंने नगर की खास विशेषताओं की और लोगों का ध्यान आकर्षित किया और नगर की जीवन शैली को मानव संगठन का एक विशिष्ट रूप माना।

संरचनावादी राजनैतिक व आर्थिक ताकतों के बीच की भूमिकाओं को उजागर करते हैं, विकास, पतन तथा नगरीय क्षेत्रों में आने वाले स्थानीय बदलावों को रेखांकित करते हैं। वे नगर को राजनैतिक व आर्थिक संबंधों का भौतिक स्वरूप मानते हैं। वे तर्क देते है कि नगर अधिक मूलभूत शक्तियों के प्रतीक हैं। नगरों का निर्माण उन सामाजिक ताकतों द्वारा होता है जो मानव-अस्तित्व के सभी पक्षों को प्रभावित करती हैं। शिकागो विचारधारा से जुड़े बर्गीज़, मेकेंजी तथा पार्क जैसे प्रख्यात समाजशास्त्री इस वैचारिक स्वरूप के समर्थक थे। इस प्रकार नगरीय समाजशास्त्र का कोई भी अध्ययन इन दोनों अवधारणाओं को अपने आप में अवश्य समाहित करता है। इसलिए नगरीय समाजशास्त्र एक अलग पहचान वाला विषय नहीं है, बल्कि ऊपर वर्णित दोनों दृष्टिकोणों का मिला जुला रूप है।

1.4 नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति एवं संभावनाएं

नगरीय समाजशास्त्र एक व्यापक एवं विभिन्न दर्शनग्राही समाजशास्त्र है। यह संबंधित विज्ञानों पर निर्भर है तथा अपनी विषय वस्तु इतिहास, अर्थशास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान, लोक प्रशासन तथा सामाजिक कार्य आदि से प्राप्त करता है।

यह स्थानीय सामाजिक संस्थानों तथा नगर के सामाजिक समूहों, राजनीति विज्ञान, खासकर राजनैतिक व्यवहार तथा निर्णयात्मक अर्थशास्त्र को उसके सार्वजनिक नीति के संदर्भ में, कर व्यवस्था तथा सार्वजनिक व्यय और सामूहिक संस्कृति के संदर्भ में मानव-विज्ञान के स्थानीय वितरण पर जोर देते हुए भौगोलिक क्षेत्र का अंशाच्छालन करता है।

बॉक्स 1.4

नगरीय भूगोलकारों ने महत्वपूर्ण रूप से योगदान दिया है। इस मामले में सिन्हा (1970) के कर्नाटक के उत्तरी कनारा जिले के सिरसी नगर पर किये गये अध्ययन का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। सिन्हा ने नगर से संबंधित आंकड़ों को जुटाने में सांख्यकीय सूत्र का इस्तेमाल किया हैं। नगर की विकास प्रक्रिया को अत्यधिक बारीकी से समझने का प्रयास किया है। भारत की नगरीय विकास पद्धतियों के बारे में 'नेशनल ज्यॉगरफीकल जर्नल ऑफ इंडिया' में अनेक लेख प्रकाशित किये गये हैं।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है समाजशास्त्र की विषय वस्तु नगर तथा उनका विकास तथा इससे जुड़ी समस्याएं जैसे ट्रैफिक नियमन, सार्वजनिक जल वितरण प्रणाली, सामाजिक स्वास्थ्य, सीवर व्यवस्था, आवास, भिखारियों की समस्या, किशोर अपराध, अपराध आदि हैं।इस प्रकार नगरीय समाजशास्त्र की संभावनाएं बढ़ती जा रही

हैं, क्योंकि यह केवल नगरों के विस्तार तथा उससे जुड़े तथ्यों का अध्ययन नहीं करता, अपितु नगरीय समाज की गत्यात्मक प्रकृति से जुड़ी अनेक समस्याओं के समाधान भी तलाशता है। नगरीय समाजशास्त्रियों की रुचियां (नगरीय समाजशास्त्र के विशेषज्ञ) तथा परिस्थितिकी विज्ञानियों की रुचियां नगरों तथा महानगरों के योजनाकारों का भी अंशाच्छादन करती हैं। इसके अलावा समाज सेवकों शिक्षा विशेषज्ञों जातीय संबंधों के जानकारों आवास तथा नगर विकास एवं पुनर्वास से जुड़े विशेषज्ञों का भी अंशाचछादान करती हैं। (जिस्ट; 1957) इसलिये इस क्षेत्र में अनेक मूलभूत अवधारणाओं को स्पष्ट करने और उनकी पुनर्व्याख्या करने की जरूरत है – जैसे समुदाय, परिस्थितिकी, नगर, नगरीय, नगरवाद, नगरीय समाज, नगरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण आदि।

समुदायः समुदाय शब्द के अनेक अर्थ हैं। कभी-कभी यह सामान्य जन बसावट के लिये इस्तेमाल होता है अथवा किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले सभी लोगों के लिये इस्तेमाल होता है। प्रायः यह शब्द किसी स्थान विशेष तथा उसके निवासियों से भी आगे का अर्थ देता है। उदाहरण के लिये डेविस इस बात पर जोर देता है कि समुदाय का अर्थ सामाजिक पूर्णता है। इसी के अनुसार समुदाय शब्द की व्याख्या करते हुए डेविस कहता है कि एक छोटा प्रादेशिक समूह जिसमें सामाजिक जीवन के सभी लक्षण विद्यमान होते हैं .... यह एक छोटा स्थानीय सामाजिक समूह होता है, जो एक पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करता है। मैकआइवर तथा पेज इसकी व्याख्या दूसरे दृष्टिकोण से करते हैं। वे संबंधों पर अधिक जोर देते हैं और सामाजिक संगठन पर कम। समुदाय की मौलिक कसौटी यह है कि इसके अंतर्गत सभी प्रकार के सामाजिक संदर्भ मौजूद रहते हैं।''यदि सामान्य निवास-स्थल सभी निवासियों के बीच सकारात्मक भावात्मक संबंध स्थापित करते हैं या निवासियों के सभी समूहों के बीच ऐसे संबंधों का निर्माण करते हैं, उसे इसे समुदाय कहा जायेगा। इसके समुदाय में शामिल व्यक्तियों में अपनेपन की भावना होती है तथा परस्पर मित्रता का भाव होता है, परस्पर सहयोग की स्थिति होती हैं। एक समुदाय अपने सभी कार्यों को संपन्न करने में सक्षम होता है।

परिस्थितिकीः रोबर्ट ई. पार्क ने नगरीय स्थानों के विश्लेषण के लिए प्राकृतिक विज्ञान (परिस्थितिकी) के सिद्धांतों का विनियोजन किया था। (नगरीय परिस्थितिकी) (डब्ल्यू फ्लेंगन, 1993) सरल शब्दों में कहें तो, परिस्थितिकी वह विज्ञान है जो जीवधारियों व पर्यावरण के बीच संबंधों का अध्ययन करता है।नगर किसी भी अन्य पर्यावरण की तरह एक अनुबंधनीय घटक है, निर्णायक घटक नहीं।

नगरीय परिस्थितिकी एक ऐसे विचार से संबंधित है जो शिकागो विचारधारा की दैन था जो नगरीय संगठन की तुलना जैविक जीव से करता है। नगरीय परिस्थितिकीय नगरीय समाजशास्त्र तथा नगरीय मानव-विज्ञान दोनों एक प्रभावी सिद्धांत रहा है। यह सिद्धांत एक विस्तारित रूपक है जो इस बात की व्याख्या करने में सहयोगी है कि नगरीय क्षेत्रों तथा नगरीय प्रणालियों में उप-समूहों का अस्तित्व होता है।जैविक प्रणालियों की तरह ये उपसमूह सुचारू रूप से जीवन चलाने के लिए एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। ये गतिशील भी होते हैं यही कारण है कि वे राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों के हिसाब से गिरते रहते हैं।यदि इसे प्रकार्यवादी सिद्धांत से मिला दें तो अप्रवासन और उत्प्रवासन की प्रवृत्ति इनमें साफ-साफ देखी जा सकती है। किसी देश में लोग प्रवेश करते हैं और देश छोड़कर जाते हैं, दोनों ही मामलों में वे आपस में मिलजुलकर रहने तथा नये समाज में प्रवेश करने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। आप्रवासी उत्प्रवासी बन जाते हैं तथा उत्प्रवासी आप्रवासी बन जाते हैं। इस प्रकार सामाजिक संबंधों की दृष्टि से जीवन की श्रृंखला चलती रहती है।

नगरीय समाजशास्त्र के विकास पर सिलसिलेवार चर्चा से नगरीय और नगरवाद के बीच का अंतर समझ आ जायेगा। नगरीकरण नगरों के उद्‌गम से संबंधित प्रवृत्ति या प्रक्रिया है तथा नगरों के ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर लोगों का पलायन, संघर्ष और असुविधाओं से बचने के लिए लोगों का अस्थाई रूप से या हमेशा के लिए शहरों में बसने के लिए आना नगरीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत आता है। नगरीकरण में नगरीय क्षेत्रों में लोगों का बसते जाना तथा नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या का बढ़ते जाना शामिल है। इससे नगरों का विस्तार भी होता है और नगरीय बसावट का क्षेत्र भी बढ़ता है। यह उन सभी सामाजिक गतिविधियों का अध्ययन करता हैं जो सामाजिक विकास एवं परिवर्तन के कारण नगरीय क्षेत्र में घटित होती हैं।

जबकि नगरवाद, इसके विपरीत, जीवन के उन तरीकों का अध्ययन करता है जो नगरीय समुदाय में पाये जाते हैं। इसका संबंध संस्कृति उसके अर्थ, प्रतीक, दैनिक जीवन शैलियों तथा नगर के पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने से होता है। नगर तथा स्थानीय पड़ोस के सामाजिक टकरावों तथा राजनैतिक संगठनों की गतिविधियों से संबंधित घटनाएं भी नगरवाद के ही अंतर्गत आती हैं। जैसा कि लुइस वर्थ का विश्वास है, नगर का जीवन ग्रामीण जीवन से बिल्कुल अलग तरह का होता है।

इन अवधारणाओं पर आने वाली अगली इकाइयों में विस्तार से विचार किया जायेगा। जबकि मेक्स वेबर और फ्रीड्रिच ऐंजिल्स नगरों के ऐतिहासिक विकास तथा इनकी जीवन शैलियों के बीच संबंधों पर जोर देते हैं, वहीं जार्ज सिमेल नगर के लोगों काम करने तथा सोचने के तरीकों पर विशेष जोर देता है।सिमेल ने आधुनिकता पर बहुत जोर दिया है तथा पारम्परिक समाज से, जिसमें सामाजिक संबंध आत्मीयता अथवा नातेदारी आधारित हुआ करते थे, (जिन्हें प्राथमिक संबंध कहा जाता है) तथा जिसमें लोग सामंती अर्थव्यवस्था से जुड़े होते थे और परस्पर आदान-प्रदान से काम चलाया जाता था – ऐसे समाज से बदल कर आधुनिक औद्योगिक समाज में पहुँचे हैं जो नगरों में स्थित है तथा अव्यक्तिगत, विभाजित भूमिकाओं पर आधारित विशिष्टत सामाजिक संबंधों द्वारा संचालित है (जिन्हें द्वितीय संबंध कहा जाता है) तथा लाभ और हानि की गणना, गणना पर आधारित मुद्रा केंद्रित अर्थव्यवस्था द्वारा संचालित है। सिमेल के लिए आधुनिकता के सूक्ष्म पहलू बड़े शहरों अथवा महानगरों में बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं तथा लगातार जागरूकता के साथ किये जाने वाले प्रत्यक्ष व्यवहार के माध्यम से साफ-साफ दिखते हैं। सिमेल हमें आधुनिकता का सामाजिक मनोविज्ञान देता है जिसे रोबर्ट पार्क नगरवाद का समाजशास्त्र या ''नगरीय समाजशास्त्र'' कहता है।

समाजशास्त्र के अधिकतर क्षेत्रों की तरह नगरीय समाजशास्त्री सांख्यकीय विश्लेषण, निरीक्षण, सामाजिक सिद्धांत, साक्षात्कार तथा अध्ययन अन्य तरीके अपनाते हैं जिनमें अनेक विषय शामिल हैं, जैसे पलायन, जनसांख्यिकीय रुझान, अर्थशास्त्र, गरीबी, जातीय संबंध तथा आर्थिक रुझान आदि।

बोध प्रश्न 2

1) 'शिकागो विचारधारा' पर एक आलेख तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नगरीय समाजशास्त्र में लुइस वर्थ के योगदान का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

क) समाजशास्त्र के उपक्षेत्र के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का जन्म ..... में हुआ।

ख) ..... मुम्बई विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के पहले प्रोफेसर थे।

ग) नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें लोग ..... क्षेत्रों से महानगरों तथा नगरों की ओर पलायन करते हैं।

1.5 सारांश

नगरीय समाजशास्त्र को समाजशास्त्र की औपचारिक शाखा या विचारधारा के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका में 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में मान्यता प्राप्त हुई थी। यद्यपि एक सुव्यवस्थित नगरीय समाजशास्त्र के रूप में वह 20वीं शताब्दी में स्थापित हो पाया।

नगरीय समाजशास्त्र की प्रकृति तथा उसकी संभावनाएं अत्यधिक व्यापक हैं क्योंकि इसमें नगरीय जीवन का तथा इसके बदलते वातावरण का पूरा फलक समाहित है।नगरीय समाजशास्त्र का जन्म औद्योगीकरण, ग्रामीण जीवन पद्धतियों के टूट कर बिखरने जो लाखों वर्षों से मनुष्य के जीवनयापन के आधार बने हुये थे जिसके परिणामस्वरूप उपजी समस्याओं के समाधान के लिए तेजी से हुए नगरीकरण के कारण हुआ। इसका निर्माण सामाजिक एकीकरण के केंद्रीय विचार के इर्द-गिर्द नये नगरीय समाज द्वारा हुआ जो ग्रामीण आप्रवासियों से बना था, जिसमें बढ़ती जनसंख्या, आर्थिक विकास तथा सामाजिक गतिशीलता व सामाजिक संघर्ष के कारण सामाजिक एकीकरण के पारंपरिक संस्थान दरकने लगे थे।क्योंकि अमेरिका के महानगरीय क्षेत्र विकास आप्रवासन तथा परिवर्तन के प्रतिमान बने, उन्होंने एक सामाजिक प्रयोगशाला दी जिसमें सामाजिक विज्ञानियों ने गांवों से उखड़कर आए आप्रवासियों के लिए नगरीय समाज के रूप में एकीकरण की स्थितियों व संभावनाओं का पता लगाया। ग्रामीण क्षेत्रों तथा समुद्र पार से बड़ी संख्या में लोग इस नये बेबी लोन आकर बसे थे।

आधुनिक नगरीय समाजशास्त्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि को कुछ महत्वपूर्ण समाजशास्त्रियों ने जन्म दिया जिनमें कार्ल मार्क्स, फर्दीनंद, टोनीज एमिली दुर्खम, मैक्स वेबर तथा जार्ज सिमेल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने

नगरीकरण को आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया तथा इसके सामाजिक अलगाव, वर्ग निर्माण तथा सामूहिक और व्यक्तिगत पहचानों की उत्पत्ति अथवा समाप्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया और उन्हें सैद्धांतिक रूप दिया।

इन सैद्धांतिक पृष्ठभूमियों को समाजशास्त्रियों तथा शोधकर्त्ताओं के एक समूह ने इनका विस्तार किया और विश्लेषण किया जो 20वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में शिकागो विश्वविद्यालय में कार्यरत थे। शिकागो की समाजशास्त्रीय विचारधारा में रोबर्ट पार्क, लुइस वर्थ तथा अर्नेस्ट बर्गेस ने शिकागो नगर में समाजशास्त्र में नगरीय शोध कार्य में क्रांतिकारी भूमिका निभाई और मात्रात्मक तथा मानव-विज्ञान संबंधी अनुसंधान विधियों के इस्तेमाल द्वारा मानव-भूगोल का विकास किया।

शिकागो विचारधारा द्वारा विकसित किये गये सिद्धांतों का नगरीय समाजशास्त्र में महत्व गंभीर रूप से स्वीकार किया गया और इसकी आलोचना भी हुई, परन्तु फिर भी नगरीकरण तथा सामाजिक विज्ञानों में नगर के अस्तित्व व स्वरूप को समझने में इसका ऐतिहासिक महत्व है। वह विचारधारा अनेक क्षेत्रों, जैसे – सांस्कृतिक समाजशास्त्र, आर्थिक समाजशास्त्र तथा राजनैतिक समाजशास्त्र आदि में से निकाली जा सकती है।

नगरों तथा सामाजिक जीवन के नगरीकरण का विकास सामाजिक विज्ञान की जिज्ञासा के केंद्र में लंबे समय से मौजूद रहा है। नगरीय आवास, राजनीति, अंतर्समूहों संबंध वर्ग तथा स्तरीकरण पद्धतियां, आर्थिक संरचना व जनसांख्यिकीय रुझान, तथा समुदायों की प्रकृति आदि ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें विद्वान जानना और समझना चाहते हैं। सामाजिक वैज्ञानिकों ने नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक अंतर्संबंधों पर विशेष रूप से ध्यान दिया है क्योंकि नगरों में अनेक सांस्कृतिक परिवेशों को एक साथ सम्हालने की अद्‌भुत क्षमता है। आर्थिक समस्याओं तथा शक्ति गतिशीलता में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है, क्योंकि संसाधन सीमित हैं और जनसंख्या का दबाव निरंतर बढ़ता रहता है। नगर अनेक चीजों के संगम क्षेत्र बन जाते हैं क्योंकि आर्थिक संबंधों तथा अन्य अनेक प्रकार की विविधताओं जैसे नये विचार, नये लोग तथा उत्पादों का नगरीय क्षेत्रों में लगातार प्रवाह होता रहता है।

वैश्वीकरण का अवतरण और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की क्रांति ने सारी दुनिया में नगरों पर जबर्दस्त प्रभाव डाला है तथा नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन के प्रति रुचि को चरम पर ला दिया है।

बॉक्स 1.5

आज दुनिया की 55 प्रतिशत आबादी नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है और ऐसी संभावना है कि 2050 तक नगरों में रहने वालों का अनुपात 68 प्रतिशत हो जायेगा। अनुमान बताते हैं कि गांवों से नगरों की ओर लगातार होने वाले पलायन के कारण 2050 तक नगरीय क्षेत्रों की आबादी में 2.5 अरब की वृद्धि और हो जायेगी। इस वृद्धि में 90 प्रतिशत योगदान एशिया तथा अफ्रीका के देशों का होगा। ऐसा संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े बताते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग ने 2018 में पूरी दुनिया में नगरीकरण की संभावनाओं के आंकड़े प्रस्तुत किये थे। उसके अनुसार संसार में नगरीय आबादी में कुछ देश अत्यधिक वृद्धि करने वाले हैं जिनमें भारत, चीन तथा नाइजीरिया इन तीन देशों का योगदान 2018 से 2050 तक दुनिया की आबादी में 35 प्रतिशत वृद्धि करने का होगा। ऐसा अनुमान है कि 2050 तक भारत की नगरीय

जनसंख्या में 41.6 करोड़ की वृद्धि हो जायेगी, चीन की नगरीय जनसंख्या में 25.5 करोड़ की वृद्धि होगी तथा नाइजीरिया की नगरीय जनसंख्या में 18.9 करोड़ की वृद्धि होगी। दुनिया की जनसंख्या में 1950 में 75.1 करोड़ की वृद्धि हुई थी और 2018 तक यह वृद्धि 4.2 अरब हो गई। एशिया महाद्वीप के देशों में नगरों में निवास करने वालों की संख्या का अनुपात तुलनात्मक रूप से कम रहा है। फिर भी दुनिया की नगरीय आबादी का 54 प्रतिशत एशिया के नगरों में निवास करता है। यूरोप के नगरीय क्षेत्रों में दुनिया की 13 प्रतिशत नगरीय आबादी निवास करती है तथा अफ्रीका के नगरीय क्षेत्रों में भी दुनिया के नगरीय क्षेत्रों की 13 प्रतिशत आबादी निवास करती है। इस समय नगरीय आबादी का सबसे अधिक अनुपात उत्तरी अमेरिका में है (2015 में 82 प्रतिशत)।

लातिन अमेरिका तथा कैरीबियन देशों में 81 प्रतिशत यूरोप के देशों में 74 प्रतिशत तथा ओसीनिया में 68 प्रतिशत नगरीय आबादी है। एशिया के देशों में अब नगरीय आबादी का अनुपात लगभग 50 प्रतिशत है। इसके ठीक विपरीत अफ्रीका में ग्रामीण आबादी का अनुपात बहुत ज्यादा है। अफ्रीका के देशों में 43 प्रतिशत लोग नगरों में निवास करते हैं।

स्रोतः संयुक्त राष्ट्र, आर्थिक तथा सामाजिक मामलों का विभाग।

1.6 संदर्भ

Rao, M.S.A., 1974 Urban Sociology in India, Delhi: Orient Longman, Urbanization and Urban System in India by Ramachandran.

Sandu, RanvinderSingh : Urbanization in India – Sociology Contributions (Sage, Delhi).

Bergel E.E.: 1955 Urban Sociology McGraw Hill Book

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) नगरीय समाजशास्त्र का विकास पश्चिमी समाजों में हुआ था क्योंकि विद्वानों की रुचि नगरों तथा उनसे संबंधित जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक संरचनाओं एवं उनके संचालन में बढ़ गई थी। नगर सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते थे जिनमें वे रहते थे। अधिकतर सिलसिलेवार ध्यान अमेरिका, विशेष रूप से अमेरिका के शिकागो नगर में दिया गया।

2) भारत में एक विचारधारा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र का विकास मुम्बई में हुआ। 1915 में मुम्बई विश्वविद्यालय में नगर योजनाकार के रूप में काम करने वाले पैट्रिक गैडेस का इसमें विशेष योगदान था। 1920 मे मुम्बई विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर जी. एस. घुरये ने पैट्रिक गैडेस का अनुसरण करते हुए नगरों पर काम किया। 1951 के बाद भारत में नगरीकरण की गति तेज हो गई और इसके साथ ही नगर संबंधी जानकारियों तथा गतिविधियों में विद्वानों की रुचि बढ़ गई। प्रोफेसर जी. एस. घूरे ने 'सिटीज़ ऑफ इण्डिया' नामक शोध तैयार किया। इसका प्रकाशन 1953 में 'सोशियोलॉजिकल बुलेटिन' पत्रिका के एक अंक में हुआ। इस पत्रिका का आरम्भ मुम्बई विश्वविद्यालय में

घूरेजी ने किया था। इसके बाद अन्य विद्वान जैसे एम. एस. ए. राव तथा उनके अनेक साथियों ने इस क्षेत्र के अध्ययन में अपना योगदान दिया।

बोध प्रश्न 2

1) 1920 में अमेरिका के शिकागो नगर में कुछ विद्वान ने समाज में होने वाले परिवर्तनों तथा सामाजिक संस्थानों में आने वाले बदलावों पर पैनी नजर रख रहे थे। अनेक विद्वान जिनमें रॉबर्ट ई. पार्क, ई. एन. डब्ल्यू. वर्गीस, आर. डी. मैकेन्जी, लुइस वर्थ ने समाजशास्त्र के इस क्षेत्र के अध्ययन में योगदान दिया। इन विद्वानों तथा इनकी विचारधारा को 'शिकागो स्कूल' के नाम से जाना गया। शिकागो स्कूल के अंतर्गत काम करने वाले इन विद्वानों ने अनेक दृष्टिकोणों से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों का निरीक्षण किया। लुइस वर्थ ने नगरवाद को एक ऐसी 'जीवन शैली' कहा है जो नगरीय जीवन को विशेष बनाती है। नगर में रहने वाले लोगों के जीवन, नगरों की संरचनाओं आदि का ई. डब्ल्यू. बर्गीस ने अध्ययन किया। इन सभी कार्यों ने मिलकर शिकागो में नगरीय समाजशास्त्र की एक ऐसी विचारधारा को जन्म दिया जिसे शिकागो विचारधारा के नाम से ख्याति प्राप्त हुई।

2) लुइस वर्थ ने नगरीय जीवन को जीवन का एक तरीका (ए. वे ऑफलाइफ) कहा था। लुइस वर्थ ने इसका गहराई से अध्ययन किया उसके आधार पर उन्होंने नगरीय जीवन की प्रमुख विशेषताओं को खोज निकाला, जैसे – नगरीय जीवन में संगठन औपचारिक होते हैं, अलगाव की भावना रहती है और लोग प्रायः अलग-थलग पड़ जाते हैं, निकट पड़ोस में रहने वालों को भी लोग नहीं पहचानते। व्यवसाय और रहन-सहन के ढंग से भी नगर निवासियों के कुछ विशेष होते हैं जो ग्रामीण लोगों के रहन-सहन और व्यवसायों से मेल नहीं खाते।

3) क) अमेकिरा

ख) पैट्रिक गैडेस

ग) ग्रामीण